

# पंजवां अध्याय

अर्जुन उवाच

कर्म त्याग दी मैहमा गाओ मुड़ फिर कर्म योग बढयाओ<sup>१</sup>  
इयों न भरमाओ चित्त मेरा इक राह दस देओ चंग चंगेरा  
श्री भगवानोवाच

इक मारग सन्यास कहांदा दूजा कर्म योग सदवादा<sup>२</sup>  
दोवें राह इक था लै जावन मोक्ष द्वारे तीक पहुँचावन  
पर जद तुलना कीती जावे कर्म योग उत्तम असवावे

नित्त सन्यासी ओह सदवादा राग द्वेश वस्स जो नहीं आंदा<sup>३</sup>  
सुख दुख विच जो न घबरावे सहज ही बंधन थो छुट जावे

योग अते सन्यास नूँ अर्जुन बाल अजांणे अड अड समझन<sup>४</sup>  
पर पंडित जो तत्त पछाणे सांख्य योग नूँ इको ई जाणे  
भावे इक राह कदम उठावे फेर बी दोहाँ दा फल पावे

जो पदवी पावे सन्यासी उस जा पहुँचे योगाभ्यासी<sup>५</sup>  
सो ज्ञानी एह तत्त पछाणे सांख्य योग नूँ जो इक जाणे

योगाभ्यास मूल है सभ दा <sup>६</sup> योग विना सन्यास न लभ दा  
 मुनी मुनीशर योगाभ्यासी <sup>७</sup> सहज ही पावण ब्रह्म अविनाशी  
 योग कमावे जती कहावे इन्द्रियां ते मन जित्त जावे  
 शुद्ध आत्मा तत्त पछाणे आत्मा नूं जो सब विच जाणे  
 ऐसा नर जद कर्म कमांदा <sup>८-९</sup> कर्म बंधना विच नहीं आंदा  
 योगी अखीयां मीटे, खोले <sup>८-९</sup> चलजे, सुंघे, सुणे, ते बोले  
 छोहवे, स्वास लवे, सौं जावे दुनियां दे सब कर्म कमावे  
 पर हर वेले तत्त पछाणे “मैं कुभ नहीं करदा” एह जाणे  
 ओखे इन्द्रियां गुण कारन <sup>१०</sup> गुण वस्स हो सब काज सवारन  
 जो नर मोह ममता तज देंदे <sup>१०</sup> ब्रह्म अर्पण सब कर्म करेंदे  
 सो नर कमल फूल दो न्यांई’ <sup>११</sup> पाप दे भागी बणदे नाहीं  
 योगी मोह ममता छड जांदे <sup>११</sup> आतम शुद्धी बल चित्त लांदे  
 तन मन बुद्ध इन्द्रियां कारन <sup>१२</sup> योगी सब कम्म काज सवारन  
 योगी फल इच्छा छड जांदा <sup>१२</sup> तद ओह परम शांती पांदा  
 कामी कर्म फलां नूं चाहवे <sup>१३</sup> कर्म बंधनां बिच फस जावे  
 इस नगरी दे नों दरवाजे <sup>१३</sup> आत्मा तिस विच सुखी विराजे  
 मन थों कर्म त्याग दिसलावे न कुभ करे न ही करवावे

१४

माया मोह विच्च मन है मचदा कर्तापन ईश्वर नहीं रचदा  
 कर्म नूं वी प्रभ रचदा नाहीं न जोड़े प्रभ फल संग तहिं  
 माया दे स्वभाव थों अर्जुन कर्म, कर्तृ, ते संग उपजला

१५

पाप करे कोई पुन्य कमावे पाप पुन्य प्रभु न अपनावे  
 विच्च अज्ञान ज्ञान लुक जांदा जीव इसे गल्ल विच्च भरमांदा

१६

आत्म ज्ञान दे कारण अर्जुन सब अज्ञान नाश हो जावला  
 ज्ञान रूप सूरज चढ़ जांदा ज्ञानी तद प्रभ दरशला पांदा

१७

प्रभ दो चरणीं ध्यान लगा के प्रभ विश्व अपला आप रमा के  
 प्रभ दी भक्ति विच्च थिर होके ज्ञान नाल पापां नूं धोके  
 ज्ञानी मोक्ष धाम नूं पावला जिस थां जाके मुढ़ न आवला

१८

ज्ञानी पंडित तत्त पछानला सब जीवां नूं इक सम जानला  
 शूदर, गौ, विप्र, विद्वान कुत्ता, हाथी, एक समान

१९

मन इक सम इक थां जो लांदे एथे इ जनम मरन जित्त जांदे  
 ब्रह्म इक सम निर्दोश कहांदा ज्ञानी ब्रह्म विच्च थिर हो जांदा

२०

ब्रह्म विखे जो लोन है ज्ञानी मोह विच्च भुलया नहीं जो प्राणी  
 सुख पाके खुश होदा नाहीं दुख आवे ते रोदा नाहीं

२१

विषय भोग थों जो मन मोड़ने आत्मा दे विच जो सुख लोड़ने  
सो नर ब्रह्म नाल जुड़ जाँदे सदा ही सो नर आनंद पाँदे

२२

जो सुख विषय भोग थों लभ दे दुख दलितदर मूल ने सम दे  
एह सुख नाशवान तूँ जाणी इस नूँ सुख न समझन ज्ञानी

२३

देह त्यागण थों पहलों प्यारे सबर सबूरी मन जो मारे  
मन मारे संसारी हाँके काम क्रोध दे वेग नूँ रोके  
ऐसा नर योगी सदबावे सो नर परम शांती पावे

२४

जिस हिरदय विच आनंद बसदा जिस विच ब्रह्म दा चानण रसदा  
सो योगी निर्वाण नूँ पाँदा ब्रह्म जोत विच लीन हो जाँदा

२५

ऋषि मुनी जो आनंद रते दुख पाप सब जावण कटे  
छुट दुभदा बस मन चित्त करदे प्राणी मात्र दा हित करदे  
सो मुनी पद निर्वाण दा पाँदे ब्रह्म बिखे ओह लीन हो जाँदे

२६

काम क्रोध थों दूर जो रहेंदे मन अपने नूँ बस कर लेंदे  
सो आत्म ज्ञानी तर जाँदे सहज ब्रह्म निर्वाण नूँ पाँदे

२७

विषयाँ थों मन दूर हटा के ध्यान भुवाँ विचकार टिका के  
स्वासाँ ताई संयम करके प्राण अपान नूँ इक सम करके

इन्द्रे मन बुद्धी जित्त जावे मुक्ती मारग कदम बधावे  
इच्छया भय क्रोध तज देदे सो मुनी जीवन मुक्त सुदेदे

यज्ञ तर्पा दा भोगन वाला मैं सब सृष्टी दा रखवाला  
सब संसार रचाबण द्वारा प्राणी मात्र दा मैं प्यारा  
जो कोई मैंनू ऐसा ध्यावे सो नर परम शर्ती पावे

इति श्रीमद्भगवद्गीता उपनिषद् ब्रह्मविद्या योगशास्त्र श्रीकृष्ण अर्जुन  
संवाद दा संन्यास योग नाम पंजरा अध्याय समाप्त होया ।